International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.104-108

कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवन शैली, व्यावसायिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

राजीव कुमार शर्मा*

प्रस्तावना

शिक्षा व्यवस्था किसी भी समाज के विकास की आधार शिला होती है। विद्यालय शिक्षा से उच्च शिक्षा तक यह व्यवस्था जैसी होगी समाज में नैतिकता तथा आचरण का प्रवाह भी उसी तरह परिलक्षित होगा। शिक्षा सीखने और सिखाने की औपचारिक–अनौपचारिक व्यवस्था है। वस्तुतः शिक्षा एक व्यापक एवं बहुआयामी अर्थ वाला शब्द है और सीखने की प्रक्रिया ही इसका मूलाधार है। वास्तविक स्वरूप में शिक्षा शब्द केवल ज्ञानार्जन मात्र नहीं है। यह वह शक्ति है जो व्यक्ति को आचरण की श्रेष्ठता तक ले जाने की क्षमता रखती है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में योग देती है, उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है, उसे जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है।

रस्किन :– ''शिक्षा का अभिप्राय व्यक्ति को यह सिखाना नहीं है जो वे नहीं जानते, अपितु इसका अभिप्राय उन्हे वह व्यवहार करना सिखाना है जो वे नहीं करते।''

मानव में सीखने की प्रक्रिया जन्म से मृत्यु पर्यन्त अनवरत चलती रहती है। उदाहरण स्वरूप– शिशु अपनी माँ तथा पालन–पोषण करने वाले अन्य व्यक्तियों के उन व्यवहारों, जिन्हें वह स्वयं देखता–सुनता है, से बहुत कुछ सीखता है। शिक्षा की यह स्वतः परिचालित सहज प्रक्रिया है जो केवल औपचारिकताओं से भरे विद्यालय में ही घटित नहीं होती बल्कि इस प्रक्रिया में बालक, परिवार, आस–पड़ोस, समाज सभी का योगदान रहता है। बालक यदि विद्यालय से समयबद्धता, नियमितता, नेतृत्व, अनुशासन, विशिष्ट ज्ञान, कौशलों एवं दक्षताओं को औपचारिक रूप से ग्रहण करता है तो वहीं घर, परिवार, पड़ोस व समाज से वह खान–पान, रहन–सहन, सद्विचार, दृष्टिकोण व आदतों को अनौपचारिक रूप से भी सीखता है। जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव उसके विद्यालयी अधिगम, उपलब्धि एवं व्यक्तित्व पर पड़ता है। बालकों का व्यवहार यदि सकारात्मक होता हैं तो वह प्रगतिशील रहता है अन्यथा उसका विकास रूक जाता है। खान–पान, गतिविधियों का चुनाव एवं व्यवहार जीवनशैली को प्रभावित करता है। सकारात्मक जीवनशैली व्यक्ति के अंदर प्रसन्नता का संचार कर सकती है वही नकारात्मक जीवनशैली व्यक्ति में दुःख, बीमारियों तथा तनाव को बढ़ा सकती है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

किसी भी शोध कार्य की गुणवत्ता हेतु उसके चरों से सम्बन्धित ग्रंथ तथा पूर्व में हुए शोधों का अध्ययन करना जरूरी है।संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्त्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता है। जहॉ उसे अपने क्षेत्र से संबंधित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ है, कहाँ निष्कर्ष विरोध है, कहाँ अनुसंधान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्त्ताओं के अनुसंधान कार्य की जॉच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत–सी अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रंथों का ज्ञान होता है, जो उसके अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते हैं। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा अनुसंधान प्रतिवेदनों की अच्छाइयों एवं कमियों को जान लेने के बाद इस बात की संभावना बहुत कम हो जाती है कि स्वयं एक घटिया अनुसंधान करेगा अथवा अनुसंधान प्रक्रिया संबंधी उन गलतियों की पुनरावृत्ति करेगा, जो उसके पूर्व वाले शोधकर्त्ता कर चुके हैं।

[6] शोधार्थी लॉर्डस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

सक्सेना, रूचि (1988): ने ''घरेलू व कामकाजी महिलाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास, अभिप्रेरणा, जिज्ञासा व समायोजन पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन।'' विषय पर पीएच.डी. स्तरीय शोधकार्य सम्पन्न कर निष्कर्षात्मक रूप में पाया कि घरेलू व कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक सम्बन्ध उनके बालकों के समायोजन स्तर पर वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस प्रकार की महिलाओं के भिन्न–भिन्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्तर, सामाजिक स्तर व शैक्षिक समायोजन स्तर में भी भिन्नता पाई जाती है। बालक, बालिकाओं की तुलना में ज्यादा अच्छा शैक्षिक समायोजन रखते है। कामकाजी महिलाओं के बालकों में जिज्ञासा, उपलब्धि व अभिप्रेरणा पारिवारिक सम्बन्धों से अत्यधिक प्रभावित नहीं होती है। बालिकाऐं, बालकों की तुलना में अधिक गम्भीर होती है।

शोध समस्या का औचित्य

संबंधित साहित्य के अवलोकन के आधार पर संबंधित क्षेत्र में कई शोध कार्य हुए है। किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में कला एवं विज्ञान संकाय के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 12 के विद्यार्थियों की जीवनशैली, व्यावसायिक रूचि व शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में कार्य नहीं हुआ है। शोधार्थी के अन्तःमन में जीवनशैली, व्यावसायिक रूचि व शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में कुछ प्रश्न उभरकर आते हैं जो इस प्रकार हैं –

- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली किस प्रकार की हैं?
- क्या विशिष्ट संकाय वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवनशैली विशिष्ट होती है?
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि किस क्षेत्र की होती है?
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली के संदर्भ में व्यावसायिक रूचि किस प्रकार की हैं ?

अध्ययन के चर

भटनागर आर.पी. व मीनाक्षी –"चर का अर्थ होता है एक ऐसा तत्व, परिस्थिति, विशेषता अथवा गुण जिसका मापन विभिन्न मात्राओं में किया जा सके, जिसके एक से अधिक माप सम्भव हो सके।"

- स्वतंत्र चर
  - (क) कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थी
- आश्रित चर
  - (क) जीवनशैली
  - (ख) व्यावसायिक रूचि
  - (ग) शैक्षिक उपलब्धि

समस्या कथन

कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली, व्यावसायिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली का अध्ययन करना।
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली एवं व्यावसायिक रूचि में सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

परिकल्पना अनुसंधान कार्य की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, इसको अनुसंधान की नींव कहा जाता है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है–पूर्व चिन्तन। यदि परिकल्पना अवैधानिक एवं अनुपयुक्त होती है तो शोधकर्त्ता का सारा प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है। परिकल्पना निर्माण के पश्चात् उसके परिक्षण के बीच की प्रक्रिया अनुसंधान कार्य है। अनुसंधान किसी नवीन तथ्य का वैज्ञानिक विधि से विश्लेषण करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि सबसे पहले अपने ज्ञान, सूचना तथा अनुभव के आधार पर एक संभावित कार्यकरण स्थिर कर लिया जाये तथा विषय से सम्बन्धित सामग्री एकत्र करके उसकी परीक्षा की जाये। परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। जब अनुसंधान कर्त्ता किसी समस्या के समाधान के लिए निर्देशित व्याख्या बनाता है तो उसे परिकल्पना कहा जाता है।

शोध की परिकल्पना

- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

भूमिका – अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है जिससे सामाजिक जटिलता, वातावरण को समझने तथा समस्याओं को हल करने का प्रयास होता है समस्याओं से सम्बन्धित अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त साख्यिकीय विधियों तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है तथा प्राप्त परिणाम से सैद्धान्तिक निष्कर्षो नियमों तथा सिद्वान्तों की खोज व पुष्टि की जाती है अनुसंधान कार्यो में किसी भी समस्या के समाधान हेतु कुछ विशेष उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जिसके आधार पर समस्या की सार्थकता की जाँच की जा सकें।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया जायेगा। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग ऐसी परिस्थितियों में किया जाता है जिसमें समस्या समाधान प्राप्त करना मुख्य ध्येय होता है।

शोध में प्रयुक्त प्रविधि

प्रविधि के अन्तर्गत किसी एक विधि को महत्व नही दिया जाता। उन सब अन्वेषण पद्धतियों का समावेश किया जाता है। जिसकी सहायता से समस्या का निराकरण किया जा सके। किसी भी अनुसंधान का उद्धेश्य एक घटना विशेष के सम्बन्ध में वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालना होता है। वैज्ञानिक निष्कर्ष कोई निरर्थक निष्कर्ष नही अपितु वास्तविक तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शोध का प्रमुख लक्ष्य अध्ययन विषय से सम्बन्धित वास्तविक तथ्यों का संकलन है। वास्तविक तथ्यों को काल्पनिक ढंग से एकत्रित नही किया जा सकता। इसके लिए कुछ प्रमाण सिद्ध तरीके का होना आवश्यक है। अनुसंधान के लिये आवश्यक वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करने के लिये काम में लाये गये निश्चित और प्रमाण सिद्ध तरीकों को ही प्रविधि कहते है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में जीवनशैली, व्यावसायिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण लिये है। इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया गया है –

- विद्यार्थियों के गतवर्ष के परीक्षा प्राप्तांकों के आधार पर "शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण।"

- विद्यार्थियों में जीवनशैली मापन हेतु ''**जीवनशैली मापनी**'' का प्रयोग किया गया। यह परीक्षण श्री एस. के. बावा व सुमनप्रीत कॉर द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षण है।
- व्यावसायिक रूचि के लिये डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में प्राकल्पनाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रतिधियों का प्रयोग किया है।

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- सी.आर.–परीक्षण
- सहसम्बन्ध

शोध न्यादर्श

जब कभी किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट ज्ञान कराने के लिए उसकी कुछ एक इकाईयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की प्रक्रिया की न्यादर्श कहते है तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है।

न्यादर्श समष्टि से चुनी गई कुछ ऐसी इकाईयों का समूह है जो इकाई समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है। प्रतिदर्श का चयन निष्पक्ष तथा यादृच्छिक रूप से किया जाना चाहिए।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में सम्भाव्य न्यादर्श के आधार पर अलवर क्षेत्र के कला एवं विज्ञान संकाय के कक्षा 12 के विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

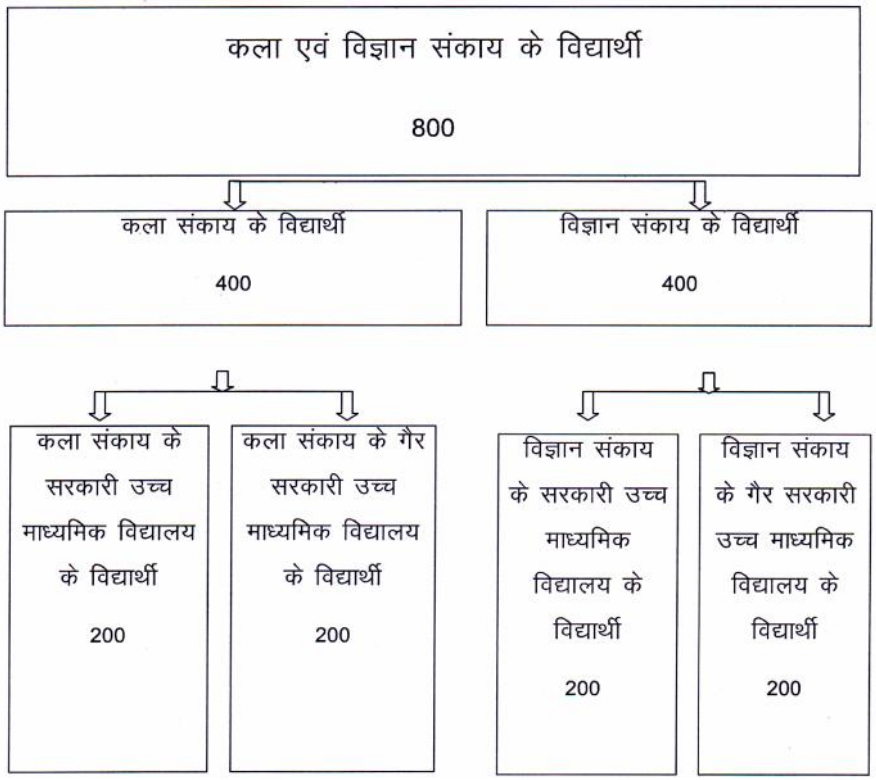

यादर्श के रूप में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का चयन किया गया। जिसमें अलवर जिले के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र/छात्राओं का डाटा संगृहण के लिए चयन किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें (Books)

1. अग्रवाल, जे. सी. (2002), एजुकेशनल रिसर्च : एन इंट्रोडक्शन, आर्या बुक डिपो, न्यू देहली।
2. अस्थाना, विपिन (2009), मनोविज्ञान : शिक्षा मे ं मापन एवम् मूल्याकंन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
3. त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., :(2006) "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. ढौड़ियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ,: (1977) "अनुसंधान परिचय", एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
6. भटनागर, आर. पी. तथा मीनाक्षी,: (2007) 'शिक्षा अनुसंधान' लायल बुक डिपो, मेरठ।
7. भटनागर, सुरेश : (2005) कोठारी कमीशन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. पाठक, पी.डी, : (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. पाण्डेय, आर.एस., : (2007) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
10. माथुर, एस. एस. एण्ड कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (2017), अधिगम एवं शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

(शोध पत्रिकाएँ)

11. नई दिशा :(जुलाई, 2008.) "राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका", नई दिल्ली।
12. बस्ती, बी.सी. तथा अन्य, (2004): "जनरल्स ऑफ इंडियन एज्यूकेशन", वोल्यूम 29, अंक–2, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, अगस्त।
13. भटनागर, टी. एवं अब्रोल, डी.एन., :(जुलाई 2004) "इण्डियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्ट्स", एनसी. ई.आर.टी., नई दिल्ली।

(एनसाइक्लोपिडिया)

14. बुच, एम.बी., : (1983–88) "फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 1, एनसी. ई.आर.टी. नई दिल्ली,
15. बुच, एम.बी., : (1988–92) "फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 2, एनसी. ई.आर.टी. नई दिल्ली।
16. बुच, एम.बी., : (1988–92..) "सिक्स सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 1, एनसी. ई.आर.टी. नई दिल्ली।

(शब्द कोष)

17. आबिद रिजवी, : मेगा हिन्दी शब्द कोश, मारूति प्रकाशन, 33 हरि नगर, मेरठ।
18. फादर कामिल बुल्के, (1987) तृतीय संस्करण, अंग्रेजी–हिन्दी कोश, एस.चन्द एण्ड कम्पनी(प्रा.लि.) राम नगर, नई दिल्ली।

Website

19. www.shodhganga.com
20. www.rajgovt.com
21. www.panchyatiraj.com
22. www.google.com

❖◆❖